ISSN : 2277-2480
Price : 350
$ 70

द्रष्टा रिसर्च जर्नल

International Refereed

Drashta Research Journal

वर्ष : 3, अंक : 10 (मार्च 2014–मई 2014)

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management & Science Subjects)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)

संपादक
आचार्य शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

website : www.chintanresearchjournal.com, e-mail : shilakram9@gmail.com

आचार्य अकादमी
भारत

Scanned by CamScanner

शोध-आलेखानुक्रम

सम्पादकीय

दर्शनशास्त्र

निम्बार्काचार्य के दर्शन में 'जीव' की अवधारणा
– डॉ.ममता भाटी 13-16

Differences, Conceptual Change and the End of History
- Dr. Jatinder Kumar Sharma 17-19

Śaṁkara on Jīva Īśvara and Sākṣin
- Soumya Kanti Sinha 20-29

हिंदी साहित्य

भगवती प्रसाद वाजपेयी के उपन्यासों में प्रकृति के विविध रूपों का विवरण
– डॉ. सुषमा यादव 30-33

हिन्दी साहित्य में आलोचना का विकास और प्रमुख आलोचकों की आलोचना पद्धति का विश्लेषण
– डॉ. सुनीता कु. खर्ब 34-38

फणीश्वर नाथ रेणु के साहित्य में आंचलिकता एवं सामाजिक चेतना
– सुनीता देवी 39-41

आधुनिक हिन्दी कविता के सामाजिक सरोकार
– सतीश कुमार 42-46

प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी–चेतना
– डॉ. शीला देवी 47-52

यायावर राजेन्द्र अवस्थी
– हरीश कुमार 53-55

मन्नू भंडारी की कहानियों में परिवर्तित सामाजिक संदर्भ
– डॉ. मनजीत कौर 56-64

पुरूष के अहं और देह वर्जनाओं को तोड़ते मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के नारी पात्र
– सुषमा रानी 65-69

संस्कृत साहित्य

'मैं' कौन हूँ? 'ईश्वर' कौन है?
– डॉ. पल्लवी शर्मा 70-73

वैदिक मनोविज्ञान
– डॉ. मंजु नरवाल 74-77

Sense-based figures of speech in English and Sanskrit
- Dr. Braja Sundar Mishra 78-85

The Vedic God, Rudra as Antariksasthana Devata: Naturalistic Interpretations
- Saradamani Das 86-88

शक्ति का स्वरूप, प्रकार एवं अभिव्यक्ति
– योगेश शर्मा 89-94

Scanned by CamScanner

दर्शनशास्त्र
International Refereed 'द्रष्टा' रिसर्च जर्नल (ISSN : 2277-2480)
वर्ष:3, अंक:10, (मार्च 2014-मई 2014) (पृ.सं. 13-16)

निम्बार्काचार्य के दर्शन में 'जीव' की अवधारणा

डॉ. ममता भाटी
असिसटेंट प्रोफेसर
महिला पी. जी. महाविद्यालय
जोधपुर (राजस्थान)

शोध–आलेख सार

जीवात्मा, परमात्मा के समान नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव वाला है, परन्तु वासना से आबद्ध होने के कारण, परमात्मा के अधीनस्थ है, अतः शरीर के जन्म, मरण, क्षय, वृद्धि, परिमाण आदि विकारों से ग्रस्त रहता है। अर्थात् परमात्मा का अंश होने से अंशी परमात्मा के सम्पूर्ण गुणों से युक्त है परन्तु परमात्मा स्वतन्त्र और निर्लेप है, जबकि जीवात्मा अंशी के वशीभूत है। असंख्य होने के कारण ही जीव को अनन्त कहते हैं। यह अनन्त ही शेष है, जिसके आधार पर यह पृथ्वी है जबकि परमात्मा विशेष है।

मुख्य–शब्द : अंश, अंशी, जीवात्मा, परमात्मा, भगवत्कृपा, बद्ध, मुक्त, मुमुक्षु, बुभुक्षु, भगवत् भावपत्ति, निजस्वरूपापत्ति तथा भेदाभेद

निम्बार्क सम्प्रदाय को वैष्णव मत का 'सनक सम्प्रदाय' कहा जाता है। इनके दर्शन को भेदाभेदवादी कहा जाता है।इनके प्रधान ग्रन्थ हैं, वेदान्त पारिजात सौरभ,दशश्लोकी आदि। निम्बार्क के अनुसार जीव एकमात्र चेतन सत्य है–

ज्ञान स्वरूप हरेरधीनं, शरीर वियोग योग्यम्।
अणु हि जीवं प्रतिदेह भिन्न ज्ञातृत्वेवंत यमनंतमाहु।।[1]

अर्थात् जीव चैतन्य ज्ञाता है, ज्योतिस्वरूप है, शरीर से संयुक्त और वियुक्त होने वाला, अणु परिमाण वाला सूक्ष्म, अनेक शरीरों में अलग अलग होने से अनन्त तथा परमात्मा के अधीन है।

जीवात्मा, परमात्मा के समान नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव वाला है, परन्तु वासना से आबद्ध होने के कारण, परमात्मा के अधीनस्थ है, अतः शरीर के जन्म, मरण, क्षय, वृद्धि, परिमाण आदि विकारों से ग्रस्त रहता है। अर्थात् परमात्मा का अंश होने से अंशी परमात्मा के सम्पूर्ण गुणों से युक्त है परन्तु परमात्मा स्वतन्त्र और निर्लेप है, जबकि जीवात्मा अंशी के वशीभूत है। असंख्य होने के कारण ही जीव को अनन्त कहते हैं। यह अनन्त ही शेष है, जिसके आधार पर यह पृथ्वी है जबकि परमात्मा विशेष है। भगवत्कृपा से जीव आत्मतत्व को जान सकता है। जीव स्वभाव से ज्ञान स्वरूप है। यह जीव का एक विशेष गुण है। जिससे उसका सम्पूर्ण शरीर प्रसन्न होता है ठीक उसी प्रकार जैसे फूल की सुगन्ध से प्रसन्न होता है।

Scanned by CamScanner

जीव नित्य, अजन्मा तथा अमरणशील है। यह ब्रह्म का एक भाग है।[2] यहीं भाग से अर्थ "शक्ति" से है।[3] अर्थात् यह कहा जा सकता है कि जीव, ब्रह्म की शक्ति है। इस युक्ति से कि "सभी प्राणी ईश्वर के पैर है"[4] इस बात की पुष्टि होती है कि जीव, ब्रह्म का भाग है। यही बात स्मृति द्वारा भी सिद्ध होती है। वेदान्त पारिजात सौरभ में यह कहा गया है कि "मेरा भाग, जीव, मरणशील लोगों के संसार में जिव के रूप में आया।"[5]इसके विरूद्ध यह प्रश्न उठता है कि यदि जीव ब्रह्म का भाग है तो ब्रह्म को भी वैसा ही आनन्द व दर्द का अनुभव करना चाहिए जैसा की जीव को होता है। इसके उत्तर में कहा गया कि जीव, आनन्द और दुःख की अनुभूति पूर्व कर्मों के प्रभाव से प्राप्त करता है। लेकिन ब्रह्म इस प्रकार की किसी भावना का अनुभव नहीं करता। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के दोष, जो कि सूर्य का एक भाग है, सूर्य पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालते, क्योंकि वह सम्पूर्ण है। अतः जीव ज्ञान स्वरूप है, ज्ञानी है, भोक्ता है, ब्रह्म के नियन्त्रण में है तथा ब्रह्म का भाग है यह सभी बातें जीव के लिए बंधन व मुक्ति दोनों अवस्थाओं में सत्य है।[6]

निम्बार्क ने जीव के अणु परिमाण को स्वीकार किया है। उनके अनुसार यदि जीव को मध्यम आकार का स्वीकार कर लिया जाए तो जीव भी मिट्टी के घड़े के समान नाशवान हो जायेगा। इस सिद्धान्त को मानने वाले जीव के परिमाण को शरीर के परिमाण के अनुसार मानते हैं। इससे यह मानना होगा कि एक हाथी की आत्मा का परिमाण उसके शरीर के समान ही विशाल होगा तथा एक चींटी की बुद्धि का परिमाण उसके शरीर के समान ही छोटा होगा। परन्तु ऐसा मान लेने पर यह कठिनाई उत्पन्न हो जाती है कि जब हाथी की बुद्धि, चींटी का शरीर प्राप्त कर लेगी या जब चींटी की बुद्धि, हाथी का शरीर प्राप्त कर लेगी तो दोनों के लिए दोनों ही शरीरों में प्रवेश पाना असंभव हो जायेगा। इसलिए मध्यमपरिमाणवादियों अर्थात् जैन दार्शनिकों का दृष्टिकोण स्वीकार नहीं किया जा सकता।[7]

निम्बार्काचार्य जीव को विभु परिमाण का मानने के पक्ष में भी नहीं हैं। उनका यह मानना है कि यदि जीव के सर्वव्यापी परिमाण को स्वीकार कर लिया जाएगा तो जीव की उत्क्रान्ति (आत्मा का शरीर से बाहर निकलना), गति (आत्मा का उच्च संसार जैसे चन्द्रमा आदि की ओर अग्रसर होना) तथा आगति (अर्थात् दूसरे संसारो से इस संसार मे आत्मा का आगमन) सम्पन्न नहीं होगी क्योंकि सर्वव्यापी वस्तु गति नहीं कर सकती है। केवल महान ब्रह्म ही सर्वव्यापी स्वभाव का है। अतः वे विभुपरिमाणवादियों अर्थात् शंकर से मतभेद रखते हैं।

जीव को अणु सदृश मान लेने पर यह प्रश्न उठता है कि जब जीव अणु परिमाणत्व का है तब यह सम्पूर्ण शरीर के आनन्द और दुःखों का अनुभव कैसे कर सकता है इसके उत्तर में यह बताया गया है कि जिस प्रकार चन्दन का एक बूंद लेप, शरीर के एक भाग पर लगाने के बाद सम्पूर्ण शरीर को चेतना व आराम दे सकता है, उसी प्रकार जीव जो कि शरीर का एक बिन्दु मात्र स्थान ग्रहण करता है, सारे शरीर को चेतन कर देता है। इस पर यह आक्षेप उठाया जाता है कि चन्दन के लेप का उदाहरण इसके विशेष आवास के कारण उचित नहीं है। इसके प्रत्युत्तर में यह कहा गया है कि जीव भी हृदय में रहता है अर्थात् शरीर के एक भाग में रहता है, चेतना की भाँति हर जगह नहीं रहता, जैसे कि चन्दन का लेप रहता है।[8] इस प्रकार जीव बंधन तथा मुक्ति दोनों ही अवस्थाओं में अणु–परिमाण का है।[9]

निम्बार्क के अनुसार जीव असंख्य है। निम्बार्काचार्य इस बात का प्रतिपादन करते हैं कि प्रत्येक शरीर में उस शरीर की सीमानुसार एक अलग जीव होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि सभी प्राणियों

Scanned by CamScanner

में ब्रह्म तो एक है परन्तु जीव अलग–अलग है तथा अनन्त है। ब्रह्म और जीव दोनों ही अपने सुभिन्नकारी निशान से युक्त हैं, वे सांख्य की भाँति जीव के अनेकत्व के लिए युक्ति देते हुए कहते हैं कि यदि प्रत्येक शरीर के लिए अलग जीव को स्वीकार नहीं किया जाए तो एक व्यक्ति के सो जाने के साथ ही सभी व्यक्तियों को सो जाना चाहिए तथा एक के अचित्त हो जाने पर सभी को अचित्त हो जाना चाहिए। इसी प्रकार जब किसी एक को प्रसन्नता या अप्रसन्नता की अनुभूति होती है तो सभी को ऐसा ही अनुभव होना चाहिए परन्तु ऐसा कभी नहीं होता है, अतः जीव के अनेकत्व को ही स्वीकार किया जाना चाहिए।[10] श्रुतियों में भी इसी बात का उल्लेख मिलता है कि जीव एक नहीं है, बल्कि अनेक है, जबकि ब्रह्म एक ही है।

अनेक आत्माओं को स्वीकार कर लेने के बाद यह प्रश्न उठता है कि उपशमन द्वारा एक एक कर के हर व्यक्तिगत आत्माऐं मुक्ति प्राप्त कर लेंगी तब एक ऐसा स्तर आयेगा कि सभी व्यक्तिगत आत्माऐं मुक्ति प्राप्त कर लेंगी तथा संसार के निर्माण का अन्त हो जायेगा। इसके उत्तर में निम्बार्काचार्य ने जीव की परिभाषा देते हुए यह समझााया है कि जीव असंख्य हैं तथा असीमित हैं उनका कभी अन्त नहीं होगा। सारा संसार प्राणियों से भरा हुआ है, जिनका शरीर छोटा, सूक्ष्म तथा अस्वच्छ है।[11]

निम्बार्क के अनुसार दो प्रकार के जीव होते हैं, बद्ध व मुक्त।[12]

बद्धः–

वह जो अजन्मा (अज) है, स्वभाव से नित्य है, ऐसे कार्यो से बहने वाला है जिनका कोई आदि नहीं है तथा जो स्वयं अपने स्वभाव तथा ईश्वर के ज्ञान से वंचित है, वहीं बद्ध जीव है। बद्ध जीव स्वयं को अविद्या वश किसी देवता के शरीर के साथ या मनुष्य के शरीर के साथ या किसी प्राणी के शरीर के साथ जोड़ लेता है जो कि प्रकृति का विकार है तथा परमानन्द से रहित है।

बद्ध जीव दो प्रकार के होते हैं। मुमुक्षु व बुभुक्षु । मुमुक्षु बद्ध दो प्रकार के होते हैं – भगवद्–भावापत्ति तथा निजस्वरूपापत्ति। इसी प्रकार बुभुक्षु भी दो प्रकार के होते हैं – भावीश्रेयस्कः तथा नित्य संसारी ।[13]

मुक्तः–

वह जिसने स्वाभाविक रूप से दयनीय अवस्था से ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त कर लिया है, तथा जिसने श्रवण तथा अभ्यास से सर्वोच्च आनन्द प्राप्त कर लिया है। वह गुरू के चरणों में बैठता है, ध्यान देता है तथा अजड़ को नहीं मानता है।[14] मुक्त जीव दो प्रकार के होते हैं – नित्यमुक्त तथा मुक्त। नित्यमुक्त दो प्रकार के होते हैं – आनन्दतर्य तथा पार्षद। मुक्त भी दो प्रकार के होते हैं – भगवत् भावपत्ति तथा निजस्वरूपापत्ति।[15]

बद्ध तथा मुक्त जीव के गुण लगभग समान होते हैं बद्ध के समान मुक्त जीव भी स्वभाव से ज्ञान स्वरूप तथा ज्ञाता है। वह कर्ता, भोक्ता, अणु परिमाण तथा असीम है। यद्यपि मुक्त व बद्ध जीव के गुण समान दिखाई देते हैं परन्तु वास्तविकता मे ऐसा नहीं है। इस बात मे कोई संशय नहीं है कि मुक्त जीव, ज्ञान, ज्ञानी, कर्ता, भोक्ता अणु सदृश्य तथा निस्सीम है तथापि वह बद्ध जीवं से पूर्णतया भिन्न है क्योंकि ये सभी गुण मुक्त जीव में भिन्न अर्थ में होते हैं।[16]

इस प्रकार निम्बार्क जीद को अणुपरिमाण का, अनेक, नित्य, ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता स्वीकार करते हैं। रामानुज व मध्व के समान ही उनके विचार दृष्टिगोचर होते हैं। वे शंकर से पर्याप्त मतभेद रखते हैं

Scanned by CamScanner

विशेष रूप से जीव को विभु मानने के सन्दर्भ में। जीव और ब्रह्म के मध्य सम्बन्ध को वे "भेदाभेद" के रूप में स्पष्ट करते हैं।

संदर्भ

(1)	वेदान्त कामधेनु – 3 पद्य, ललित कृष्ण गोस्वामी, श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ, 12 महाजनी टोला, प्रयाग।
(2)	वेदान्त परिजात सौरभ 2/3/42.
(3)	वेदान्त कौस्तुभ 2/3/42.
(4)	वेदान्त परिजात सौरभ 2/3/43.
(5)	वेदान्त परिजात सौरभ 2/3/44.
(6)	The Philosophy of Nimbarka P-105, by Madan MohanAggarwal Chaukhamaba Surbharti Prakashan, Varanasi.
(7)	वेदान्त कौस्तुभ – 2/3/19.
(8)	वेदान्त पारिजात सौरभ – 2/3/24.
(9)	वेदान्त कौस्तुभ – 4/4/15.
(10)	वेदान्त रत्नमंजूषा पृ0 19.
(11)	"यदनन्तरः माहुः" वेदान्त कामधेनु 3 पद्य।
(12)	"मुक्त च बद्धं किल बद्ध मुक्तं प्रभेद बाहुल्यमथामि बोध्यम्।" वेदान्त कामधेनु – पद्य 4.
(13)	वेदान्त रत्नमंजूषा पृ॰ 22.
(14)	वेदान्त कौस्तुभ 1/4/10.
(15)	वेदान्त रत्नमंजूषा पृ0 22–23.
(16)	The Philosophy of Nimbarka,by M.M.Agarwal P-109

Scanned by CamScanner